П Р
190
Н

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY.
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.
1342/10121
Call No.
Book No. 190
(T)
1711

190

आज़ाद भारत के गाने

प्रकाशक—श्रीत्रिभुवननाथ 'आज़ाद' सैनिक

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
10 DEC. 1930

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 190
Date 3-12-71
GOVT. OF INDIA

वंदे मातरम्

आज़ाद भारत के गाने

[चुने हुए २५ राष्ट्रीय गायन-रत्न]

अभय चढ़ें हम बलि-वेदी पर, निकले मुँह से आह नहीं ;
डंडे चलें, गोलियाँ बरसें, करें ज़रा परवाह नहीं।
आज़ादी का बिगुल बजे, तब होवे सुख की चाह नहीं ;
थर-थर काँपे कलेजा उनका, चिंता की हो थाह नहीं।

संकलनकर्ता—श्रीयुत "प्रकाश"

प्रकाशक

श्रीत्रिभुवननाथ 'आज़ाद' सैनिक
देश-बंधु-स्मारक भंडार (प्रकाशन-विभाग)
चितरंजन रोड, छपरा

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथमावृत्ति] १९३० [मूल्य ~)

मुद्रक—श्रीप्रवासीलाल वर्मा, सरस्वती-प्रेस, काशी

हिंदू-समाज-सुधार-माला, लखनऊ की अपूर्व पुस्तकें

छपरा में एजेंसी खुल गई !

हिंदू-समाज-सुधार-माला की सचित्र पुस्तकों का हिंदू-समाज में इतना अधिक मान क्यों हुआ ? इसका उत्तर यही है कि इनके मनोहर गाने घर-घर में आर्य-हिंदू ललनाएँ और कन्याएँ बड़े प्रेम से गाती हैं लोग सैकड़ों की संख्या में मँगाकर इन्हें पुत्र-पुत्रियों एवं बहुओं को देते, कन्या-पाठशालाओं में बाँटते तथा ब्याह-शादी आदि उत्सवों में वितरण करते हैं। प्रचारार्थ सौ पुस्तकें ३=) में दी जाती हैं।

ईश्वर-विनय ...	-)
नारी-संगीत-रत्न (प्रथम भाग)	-)
नारी-संगीत-रत्न (द्वितीय भाग)	-)
सीता-सती ...	-)
सोहागरात के वादे ...	-)
अनमेल-विवाह ...	-)
विधवा-विलाप ...	-)
कन्या-संगीत-रत्न ...	-)
औंधी खोपड़ी और घोंघाबसंत	-)
वेश्या-दोष-दर्शन ...	-)
जुआ-दोष-दर्शन ...	-)
नशा-दोष-दर्शन ...	-)
होली हिंदू-सुधार ...	-)
अछूत-पुकार ...	-)

राष्ट्रीय पुस्तकें

'स्वतंत्रभारत' का सिंहनाद	-)
क्रांति का शंखनाद ...	-)
स्वदेशी-प्रचार विदेशी-बहिष्कार	-)
आज़ाद भारत के गाने	-)
आज़ादी की हुंकार ...	-)
तरानए वतन (उर्दू) ...	-)
भजन कुरीति-निवारण	-)
द्विजाति कौन हैं ? ...	-)
सावित्री-सत्यवान ...	=)
नारी-संगीत-रत्न (चारों भाग)	।=)
साम्य-तत्त्व (हिंदू-साम्यवाद)	॥=)
आर्य और वेद (वैदिक सभ्यता)	।॥=)

प्रचारकों और एजेंटों की हर जगह ज़रूरत है।

कमीशन बहुत अधिक दिया जाता है। पत्र भेजकर मालूम करें।

पता—(१) संचालक, ग्राम-पुस्तक-भंडार,
तिनकोनिया, छपरा

(२) संचालक, हिंदू-समाज-सुधार-कार्यालय,
सआदतगंज रोड, लखनऊ

वंदे मातरम्

आज़ाद भारत के गाने

१. वंदे मातरम्

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज-शीतलाम्
शस्य-श्यामलाम् मातरम्। वंदे०
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल - कुसुमित - द्रुम - दल - शोभिनीम्
सुहासिनीम्, सुमधुर - भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वंदे०
त्रिंश कोटि कंठ कलकल - निनाद कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खर कर बाले,
के बोले मा, तुमि अबले?
बहु-बल - धारिणीम्, नमामि तारिणीम्
रिपुदल-वारिणीम् मातरम्। वंदे०
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वंदे०

२. झंडा फहराने की प्रतिज्ञा

भारत-धन झंडा प्यारा, जीवन बलिदान करेंगे।
हम इसके लिये जिएँगे, हम इसके लिये मरेंगे॥
झंडा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़कर प्यारा।
तन-मन-धन इस पर वारा, जीवन कुर्बान करेंगे॥

डंडों की मार सहेंगे, गोली से नहीं डरेंगे।
शूली पर उछल चढ़ेंगे, पर झंडा नहीं तजेंगे॥
आओ, झंडा फहरावें, शुचि राष्ट्र-भाव दर्शावें।
सत्याग्रह-समर दिखावें, पर-हिंसा नहीं करेंगे॥

३. झंडे की आरती

जीवन-ज्योति जगानेवाले, भय की भ्रांति भगानेवाले;
मोहन, विश्व-विजय करतारे, झंडे, जीवन-राष्ट्र हमारे।
तेरे स्वागतार्थ हमने शुचि, सुंदर सुमन सजाए हैं।
सेवा में हँस-हँस मरने को, अपने शीश चढ़ाए हैं।।तेरे०
श्रम की क्लांति घटानेवाले, मा का मान बढ़ानेवाले;
जय-जय तरुण शक्ति के प्यारे, झंडे, जीवन-राष्ट्र हमारे।
हम सब तुझे गगन में ऊँचा, लख करके हरषाए हैं।
लहरा दे तू स्वतंत्रता को, राष्ट्र-हृदय हुलसाए हैं। तेरे०
हममें देश-प्रेम को भर दे, हमसे दूर दासता कर दे;
दुख-दरिद्र कर दूर हमारे, झंडे, जीवन-राष्ट्र हमारे।
भक्ति-भाव से करें आरती, कंचन थार भराए हैं।
हिंदू-मुसलमान-ईसाई, सब ही शीश झुकाए हैं॥ तेरे०

४. झंडे का गीत

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा। टेक
सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला।
वीरों को हरषानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा॥ झंडा०
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में।
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाए भय-संकट सारा॥ झंडा०
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम अविचल निश्चय।
बोलो भारत-माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा॥ झंडा०
आओ, प्यारे वीरो! आओ, देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ।
एकसाथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत-देश हमारा॥ झंडा०

इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए।
विश्व-विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥ झंडा०

५. झंडे का नमस्कार

राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति, राष्ट्रीय पताका नमो-नमो!
भारत-जननी के गौरव की अविचल शाका नमो-नमो।
कर में लेकर इसे सूरमा, तीस कोटि भारत-संतान;
हँसते-हँसते मातृभूमि के चरणों पर होंगे बलिदान।
हो घोषित निर्भीक विश्व में, तरल तिरंगा नवल निशान;
वीर-हृदय खिल उठें. मार लें भारतीय रण में मैदान।
हो नस-नस में व्याप्त चरित सूरमा शिवा का नमो-नमो ॥ राष्ट्र०
नवयुवको! स्वातंत्र्य-समर में, नवजीवन संचार करो;
शस्त्र अहिंसा से दलकर, दासता-दुर्ग को छार करो।
शांत क्रांति-युग में हे वीरो! जीवन-सुमन निसार करो;
ऊँचे स्वर से एकसाथ जननी का जय-जयकार करो।
शक्ति देखकर शत्रु-शिविर में, मचे सनाका नमो-नमो ॥ राष्ट्र०
उच्च हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ाएँगे;
विश्व-विजयिनी राष्ट्र-पताका का गौरव फहराएँगे।
सबसे ऊँची रहे, न इसको नीचे कभी झुकाएँगे;
समरांगन में लाल लाड़िले, लाखों बलि-बलि जाएँगे।
गूँजे स्वर संसार-सिंधु में. स्वतंत्रता का नमो-नमो ॥ राष्ट्र०

६. हिंदोस्ताँ हमारा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्ताँ हमारा ॥
गुरबत में हों अगर हम, रहना है दिल वतन में।
समझो हमें वहीं पर, दिल हो जहाँ हमारा ॥
पर्वत वह सबसे ऊँचा हमसाया आसमाँ का।
वह संतरी हमारा, वह पासबाँ हमारा ॥

गोदी में खेलती हैं, जिसके हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिसके दम से रश्के-जिनाँ हमारा॥
ऐ आबेरोद गंगा, वह दिन है याद तुझको।
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा॥
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में वैर रखना।
हिंदी हैं, हम-वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा॥
यूनान, मिश्र, रोमा, सब मिट गए जहाँ से।
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशाँ हमारा॥
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं मिटाए।
सदियों रहा है दुशमन, दौरे-ज़माँ हमारा॥
"इक़बाल" कोई महरम अपना नहीं जहाँ में।
मालूम क्या किसी को, दर्दे-निहाँ हमारा॥

७. हिंदोस्ताँ हमारा

क्यों हो न हमको प्यारा, हिंदोस्ताँ हमारा।
हम हैं मकीं जो इसके, तो यह मकाँ हमारा॥
इल्मो-हुनर में आगे, सबसे बढ़ा हुआ है।
पीछे रहा किसी से, कब कारवाँ हमारा॥
ऐ गुलसिताँ के तिनको, इतना हमें बता दो।
सैयाद का यह घर है, या आशियाँ हमारा॥
धीमे सुरों से गंगा यह गुनगुना रही है।
अमृत से भी है बढ़कर, आबे-रवाँ हमारा॥
क्यों हम डरें किसी से, क्यों हम दबें किसी से।
पर्वत हिमालिया-सा, है पासबाँ हमारा॥
तहज़ीब का हमीं से, सीखा सबक़ सभी ने।
गुन गा रहा है क्या-क्या, सारा जहाँ हमारा॥
ख़िदमत में उसकी 'शातिर' अब जाँ निसार कर दो।
प्यारा वतन हमारा, जन्नत-निशाँ हमारा॥

८. महात्मा गांधी नज़र-क़ैद !

दूर आँखों से हो यह कब है गवारा गांधी।
बैठते-उठते करें तेरा नज़ारा गांधी॥
दिल से, जी से, यही अब कहते हैं दौलतवाले।
है ग़रीबों की ग़रीबी का सहारा गांधी॥
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बनकर।
उनकी आँखों में खटकता है हमारा गांधी॥
आफ़तें आईं, तेरे सर पै बलाएँ आईं।
है वतन के लिये सब तुझको गवारा गांधी॥
दिल से, जी से, वह हमेशा के लिये दास हुआ।
कर लिया जिसने कभी, तेरा नज़ारा गांधी॥
जिसको देखो, यही कहता है बड़े दर्द के साथ।
हो गया आज नज़रबंद पियारा गांधी॥
सारी दुनिया में, ज़माने में, पड़े एक हलचल।
तू जो कर दे किसी जानिब को इशारा गांधी॥
क़ैदख़ाने के अँधेरे में पड़ा है 'बिस्मिल'।
देश भारत का चमकता हुआ तारा गांधी॥

९. भगवान् गांधी नज़र-क़ैद !

गांधी ! तू आज हिंद की इक शान बन गया।
सारी मनुष्य-जाति का अभिमान बन गया॥
तू सत्य, अहिंसा, दया, निस्स्वार्थ-त्याग से।
इस आज मृत्युलोक का भगवान् बन गया॥
तेरा प्रभाव, सादगी, हस्ती को देखकर।
दुश्मन भी बेज़ुबान हो हैरान बन गया॥
तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है।
जिसको लगी हवा तेरी इनसान बन गया॥

तू दोस्त है हर क़ौम का, हर-दिल-अज़ीज़ है।
सारा जहान तेरा क़दरदान बन गया॥
गो आज हिंद उठ न सके बायसे तक़दीर।
फिर भी स्वराज्य लेने का सामान बन गया॥
धिक्कार है 'माधव' हमें तैंतीस कोटि को।
तुझ-सा फ़क़ीर जेल का मेहमान बन गया॥

१०. आज़ादी के दीवाने

टेक—हँस-हँस के हो कुर्बान वतन पर शान हमारी है।
सब देश हुए आज़ाद, आज भारत की बारी है॥
आज़ादी के दीवाने, आए हैं सर कटवाने।
टुकड़े-टुकड़े हो जावें, ज़िंदा ही नरक पठावें॥
लेवें स्वराज्य हम धीर-वीर शत-शत अधिकारी हैं॥ हँस०
जग में वैभव दिखलावें, पावें स्वराज्य हम पावें।
सब जग को जाग जगावें, नहिं लेश हृदय घबरावें॥
हम वीर, अहिंसा-व्रती, शांति के सत्य पुजारी हैं॥ हँस०
वीरों का है यह बाना, हँस-हँसकर ही मर जाना।
पर पीठ नहीं दिखलाना, बस ऐसा प्रण हो ठाना॥
हम इधर निहत्थे, उधर तोप-तलवार तुम्हारी है॥ हँस०

११. आज़ादी के दीवाने

है आज ज़माना ऐ वीरो! आज़ादी के दीवानों का।
जीवन-धन सब कुर्बान करो, है आज समय बलिदानों का॥
अपना स्वराज लेना होगा, सैयाद आप भग जावेगा।
अपने पैरों पर आप डटो, तुम तजो आस परवानों का॥
हिमगिरि से लेकर सागर तक, औ ब्रह्मपुत्र से गुजंर तक।
फिर अटक-कटक लों आदर हो, अब गाँधी के फ़रमानों का॥
हो तौक़ गुलामी टूक-टूक, माता के बंधन कट जावें।
बलि-वेदी पर बलि होने को, अब चले झुंड मरदानों का॥

अब हिंद-देश में एक सिरे से आग लगा दें, ऐ भाई।
हो देश-बीच अब उथल-पुथल, औ खौले खून जवानों का॥
फाँसी से हम मत डरें ज़रा, परवाह न हो गोली बरसे।
हो खुली सँगीनों पै छाती, औ क़ौल रहे मरदानों का॥

१२. क़ौल रहे मरदानों का

निकल पड़ें अब बनकर सैनिक, भय न करें हम प्राणों का।
बिन स्वराज्य हम नहीं हटेंगे. क़ौल रहे मरदानों का॥
अंधी होकर पुलिस चलावे डंडे, कुछ परवाह नहीं।
घर का माल लूट ले जावे, निकले मुँह से आह नहीं॥
जेल-यातना हो, निर्दय-दल करे गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमिरन कर वीरो, सहते जाओ अत्याचार॥
धनी, देश-रिपु, दास, नपुंसक, लखें दृश्य बलिदानों का॥ बिन०
भगवन भला करे इरविन का, बने यशस्वी ब्रिटिश-निशान।
होय निहत्थों पर मार्शल-ला, शहरों गाँवों के दरम्यान॥
नर, नारी, बच्चों को फ़ौजी अत्याचारी खूब हनें।
भारत के कोने-कोने में जालियाँवाला बाग बने॥
चिंता नहीं, बहे लहराता, चहुँ दिश खून जवानों का॥ बिन०
अटल हमारा धैर्य देखकर गिरिवर भी टल जावेगा।
हिंसा-हीन हृदय को लखकर सागर सीस झुकावेगा॥
देख सत्य व्रत तेज हमारा हो जावेगा मंद प्रताप।
सह न सकेगा विधना भी तब शुद्ध शांतिमय हिय-संताप॥
चकरावेगा सिर दुनिया के राजनीति-विद्वानों का॥ बिन०
होगा इस भारत-स्वराज्य से जग में नूतन आविष्कार।
सीखेगा संसार हमीं से करना जाति-देश-उद्धार॥
"माधव" तो कुछ नहीं चाहता. सुख स्वराज्य या रत्नागार।
केवल हो भारत के घर-घर गाँधी-से सुत का अवतार॥
रहें धर्म पर अड़े, करें भय नहीं, तुच्छ-से प्राणों का॥ बिन०

१३. नाला-ए-बुलबुल

दे दे मुझे तू ज़ालिम ! मेरा ये आशियाना ।
आरामगाह मेरा, मेरा बहिश्तख़ाना ॥
देकर मुझे भुलावा, घर-बार छीनकर तू ।
इसको बना रहा है, मेरा ही क़ैदख़ाना ॥
इसके ही खाके टुकड़े, बदख़्वाह बन गया तू ।
मुफ़लिस समझ के जिसने, दिलवाया आबो-दाना ॥
मेहमाँ बना तू जिसका, जिससे पनाह पाई ।
अब कर दिया उसी को, तूने यों बेठिकाना ॥
इसके ही बाग़ में तू, उसके कटाके बच्चे ।
मुंसिफ़ भी बन के ख़ुद ही, तू कर चुका बहाना ॥
दर्दे-जिगर से लेकिन चीखूँगी जब मैं हरदम ।
गुलचीं सुनेगा मेरा पुरदर्द यह फ़िसाना ॥
सोज़े-निहाँ की बिजली सर पर गिरेगी तेरे ।
ज़ालिम ! तू मर मिटेगा, बदलेगा यह ज़माना ॥
मुझको न इस तरह का, अब कुछ मलाल होगा ।
"गुलज़ार" फिर बनेगा, मोहन का कारख़ाना ॥

१४. देशभक्त की आरज़ू

कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है ।
रख दे कोई ज़रा-सी, ख़ाके-वतन कफ़न में ॥
ऐ पुख़्ताकार उल्फ़त ! हुशियार, डिग न जाना ।
मा राज़ आशकारा है दार औ रसन में ॥
मौत और ज़िंदगी है, दुनिया का सब तमाशा ।
फ़र्मान कृष्ण का था, अर्जुन को बीच रन में ॥
अफ़सोस ! क्यों नहीं है, वह रूह अब वतन में ।
जिसने जिला दिया था, दुनिया को एक छन में ॥
सैयाद ज़ुल्म-पेशा, आया है जबसे "हसरत" ।
हैं बुलबुलें कफ़स में, घुग्घू फिरें चमन में ॥

१५. भारतीय बहनों से भारत-मा की अपील

टेक—ऐ बहनों ! सुन लो जी, कहती भारत-मा पुकार के ।
अब जेलें भर दो जी, है तो जीना दिन चार के ।। ऐ०
शेर—हो भारत की ललनाएँ तुम, भारत मात तुम्हारी ;
अपनी मा का दुखड़ा लखकर, अब आ जाओ अगारी ।
आशा पूरन कर दो जी, मन में ऐसा विचार के ।। ऐ०
शेर—भारत की इस पुरुष-जाति से, अब न भरोसा मुझको ;
जब लौं उनके आगे बेटी, नयनन लखौं न तुमको ।।
अपना तन-मन दे दो जी, करुणा मेरी निहार के ।। ऐ०
शेर—अर्धांगिनी कहाकर भी, जा आधा कर न दिखैहो ;
अपनी माता का पय पीकर, क्या तुम उसे लजैहो ?
मेरा आँचल भर दो जी, अजहूँ मुझको उबार के ।। ऐ०
शेर—स्वर्णाभूषण वसन विदेशी, तन से दूर करो ;
सत्याग्रह-समरांगन में आ, राष्ट्र-ध्वजा पकरो ।
अपने पग-तल दल दो जी, "भीम" शासन सरकार के ।। ऐ०

१६. क्या चाहते हैं ?

बताएँ तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं ?
ग़ुलामी से होना रिहा चाहते हैं ।
फ़क़त इस ख़ता के सज़ावार हैं हम ।
कि दर्दे वतन की दवा चाहते हैं ।।
बुरा चाहते हैं जो हम बेकसों का ।
हम उनका ही दिल से भला चाहते हैं ।।
इस उजड़े हुए गुलशने-हिंद को फिर ।
हरा और फूला-फला चाहते हैं ।।
घड़ा पाप का ग़ालिबन भर चुका है ।
ज़माने से ज़ालिम मिटा चाहते हैं ।।
वतन पर दिलोजान क़ुर्बान कर दें ।
जो मरकर भी आगे बक़ा चाहते हैं ।।

१७. और क्या चाहते हैं ?

ऐ मेरी जान भारत! तेरे लिये ये सर हो।
तेरे लिये ही ज़र हो, तेरे लिये जिगर हो॥
हिचके न तेरी सेवा से मेरी जान भारत।
गर्दन पै मेरी रक्खी शमशेर या तबर हो॥
ग़म जान के लिये भी मुझको कभी न होगा।
भारत. तेरे लिये ही आती ये काम गर हो॥
क़िस्मत का मेरी अख़्तर, चमके फिर आसमाँ पर।
सेवा में तेरी माता, गर ज़िंदगी बसर हो॥
भारत में ही सदा मैं पैदा हूँ औ मरूँ मैं।
ईश्वर न कुछ हो मन में, यह आरज़ू मगर हो॥
गर देश ही की सेवा हो प्यारा धर्म मेरा।
परमात्मा की तो फिर मेरी तरफ़ नज़र हो॥
जीवन सुफल तभी बस समझेगा "साधु" अपना।
सेवा में तेरी माता सर मेरा गर नज़र हो॥

१८. ज़ालिम से

हम बेकसों का ज़ालिम! क्यों ख़ूँ बहा रहा है।
है क्या कुसूर जिससे, ये ज़ुल्म ढा रहा है॥
भारत को दासता की चक्की में डाल करके।
गर्दन पै निर्दयी क्यों, छूरी चला रहा है॥
यह हक़ भी है हमारा, दौलत भी है हमारी।
फिर हमको किसलिये तू, दर-दर फिरा रहा है॥
लेना सबाब गर हो, तो जा चला यहाँ से।
भारत में धाक अपनी गांधी जमा रहा है॥
करता रहा गुज़र यह अब तक ग़ुलाम बन के।
पर अब तो देश का ध्याँ, दिल में समा रहा है॥
अन्याय से न तेरे, डरने का अब "नरायन"।
भारत की दासता का, अब अंत आ रहा है॥

१९. फिर ज़ालिम से

तेरी इस जुल्म की हस्ती को, ऐ ज़ालिम ! मिटा देंगे।
ज़ुबाँ से जो निकालेंगे, वह हम करके दिखा देंगे।।
भड़क उट्ठेगी जिस दम सीनए-सोज़ाँ की वह आतिश।
तो हम इक सर्द आह भरके तुझे ज़ालिम ! मिटा देंगे।।
हमारी आहो-नालाँ को कभी बेसूद मत समझो।
जो हम रोने पै आएँगे, तो दरिया ही बहा देंगे।।
हमारे सामने सख्ती है क्या, इन जेलख़ानों की।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़कर दिखा देंगे।।
हमारी फ़ाक़ामस्ती कुछ-न-कुछ रँग लाके छोड़ेगी।
निशाँ तेरा मिटा देंगे, तुझे जब बददुआ देंगे।।
कुछ इसमें राज़ था, मुद्दत से जो ख़ामोश बैठे थे।
हम अब करने पै आए हैं, तो कुछ करके दिखा देंगे।।
अगर कुछ 'भेंट आज़ादी की देवी' हमसे माँगेगी।
समझकर हम जहे क़िस्मत, तब अपने सर चढ़ा देंगे।।

२०. देख लेना

उठाएँगे जब वह तबर देख लेना।
तो लाखों उड़ाएँगे सर देख लेना।।
चलाएँगे जिस दम वो तीरे सितम को।
तो हम होंगे सिना-सिपर देख लेना।।
जो कल खुश्क शाख़े-तमन्ना थी अपनी।
उगा आएँगे उसमें समर देख लेना।।
फ़लक़ के भी दिल में चुभेगा ये जाकर।
जो उठता है दर्दे-जिगर देख लेना।।
हिला देंगे पाया ज़िमीं-आसमाँ के।
करेंगे जो दिल से क़हर देख लेना।।
जो भारत की वेदी पै सर दे चुके हैं।
वो होंगे जहाँ में अमर देख लेना।।

खुलेंगी जुबानें जो अहले दहाँ से।
तो आहों में क्या है असर देख लेना॥
जो 'गाँधी' 'जवाहर' हैं नेता हमारे।
वहीं होंगे शमशो-क़मर देख लेना॥
जहाँ में जो रोशन हैं 'शायक' के हासिद।
वे होंगे चिराग़े-सहर देख लेना॥

२१. जेल की तैयारी

घर-बार छोड़ करके जाएँगे जेलख़ाना।
यह डर नहीं है, हमको पाएँगे जेलख़ाना॥
जिस जेल में महाप्रभु श्रीकृष्णजी थे जन्मे।
वह तो हमारा प्यारा मंदिर है जेलख़ाना॥
कहते हैं लोग होती है जेल में फ़ज़ीहत।
गर वाक़ई में पूछो, जन्नत है जेलख़ाना॥
ये हथकड़ी व बेड़ी, हैं जेवरात सुंदर।
हुब्बे-वतन पै करता कुर्बान जेलख़ाना॥
गृह-कार्य में अनेकों जंजाल दीख पड़ते।
चित-शांति का है साधन, बस एक जेलख़ाना॥
दर-दर "विपिन" गुफा में धूनी रमाएँगे क्यों।
यह मुक्ति-मार्ग हमने पाया है जेलख़ाना॥

२२. जेल भर दो

भारत के नौजवानों! अब जाके जेल भर दो।
आज़ादी के समर में आ आके जेल भर दो॥
परतंत्रता की बेड़ी, माता की जाके काटो।
ज़ालिम के गोली-डंडे खा-खाके जेल भर दो॥
सुखी में पड़ के सोने का यह समय नहीं है।
गाने स्वतंत्रता के गा-गाके जेल भर दो॥
माताएँ और बहनें जब जेल जा रही हैं।

गर मर्द हो, तो कुछ भी शरमा के जल भर दो ।।
बातें बनाने का यह बिलकुल समय नहीं है।
सत्याग्रह का अवसर शुभ पाके जेल भर दो ।।
अब तो समय नहीं है पढ़ने का छात्र वीरो।
निज पूर्वजों के ख़ूँ को दिखला के जेल भर दो ।।
सैयाद को दिखा दो तप, तेज, त्याग अपना।
माता के पुत्र सच्चे कहला के जेल भर दो ।।
लखकर तुम्हारा साहस "त्रिभुवन" करे प्रशंसा।
दुशमन के दिल को प्यारो, दहला के जेल भर दो ।।

२३. देवी स्वतंत्रते !

देवी स्वतंत्रते ! तू भारत का दुख मिटा दे।
हिय में प्रमोद लाकर, उत्साह को बढ़ा दे ।।
भारत के सद्गुणों को, माता ! तू खूब जाने।
आभा स्वराज्य की से, तू इसको जगमगा दे ।।
भारत हमारा प्यारा, धन-हीन हो गया है।
सुख का प्रचार करके, दुर्दैव को भगा दे।।
तेरे बिना ये भारत, दुख से बिलख रहा है।
बुद्धी-विवेक-बल से, जातीयता जगा दे ।।
पिंजड़े में बंद हों गर, तो भी तुझे न भूलें
अब तो शरण में लेकर परतंत्रता हटा दे ।।
अज्ञान की निशा में, सोते हैं सब "प्रभाकर"
स्वाधीनता का सुंदर, मा ! राग तू सुना दे ।।

२४. देशभक्त की भावना

मादरे हिंद की तसवीर हो सीने पै बनी।
बेड़ियाँ पैरों में हों और गले में कफ़नी ।।
आज से शबे-वफ़ा का यही जोहर होगा।
फ़र्श काँटों का हमें फूलों का बिस्तर होगा ।।

फूल हो जायगा छाती पै जो पत्थर होगा।
क़ैदख़ाना जिसे कहते हैं, वही घर होगा॥
संतरी देखकर उस जोश को शरमाएँगे।
गीत ज़ंजीर की झनकार पै हम गाएँगे॥
दिल तड़पता है कि स्वराज्य का पैग़ाम मिले।
कल मिले, आज मिले, सुबह मिले, शाम मिले॥
हुक्म हाकिम का है फ़रियाद जवानी रुक जाय।
पर है मुमकिन नहीं, यह जोशे-जवानी रुक जाय॥
हों ख़बरदार, जिन्होंने ये अज़ीयत दी है।
कुछ तमाशा यह नहीं, क़ौम ने करवट ली है॥

२५. अंतिम प्रार्थना

जगदीश! यह विनय है, जब प्राण तन से निकले।
प्रिय देश-देश रटते, यह प्राण तन से निकले॥
भारत - वसुंधरा पर, सुख - शांति - संयुता पर।
शुचि शस्य श्यामला पर, यह प्राण तन से निकले।
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते।
निज देश-व्याधि हरते, यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्र-पट हो, युग नेत्र के निकट हो।
श्रीजाह्नवी का तट हो, जब प्राण तन से निकले॥
दुख दैत्य पर विजय हो, अज्ञान-रात्रि क्षय हो।
भारत समृद्धिमय हो, जब प्राण तन से निकले॥
उद्योग, सत्य, सुख हो, आलस्य हो न दुख हो।
सब का प्रसन्न मुख हो, जब प्राण तन से निकले॥
देशोपकार करते, मन मातृ - भक्ति भरते।
'जय-जय स्वदेश' रटते, यह प्राण तन से निकले॥

इति वंदे मातरम्

अछूत-पुकार

Series No.

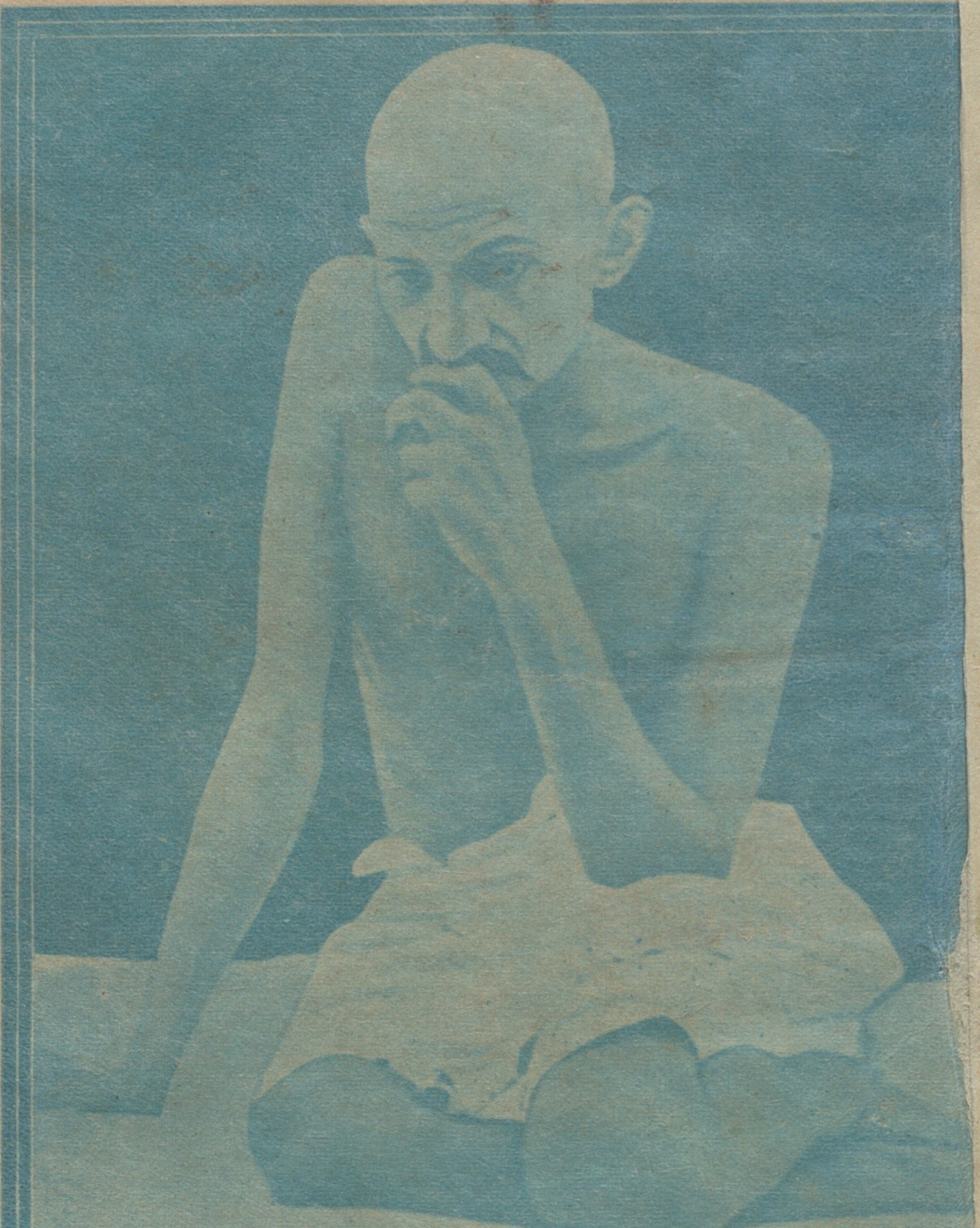

मँगाने का पता—हिंदू-समाज-सुधार कार्यालय

सआदतगंज रोड, लखनऊ.